बरेली, बुधवार
4 फरवरी, 2026
नगर संस्करण
मूल्य ₹ 7.00
पृष्ठ 16+4=20

दैनिक जागरण

inext

PAGE NO : 05 BOTTOM

इंस्पायरिंग कैंसर महामारी नहीं, अवेयरनेस की कमी से लोगों में ज्यादा डर

कैंसर से लड़ने में डर के आगे ही जीत है

World Cancer Day

जांच के लिए बायोप्सी से डरना कीमोथेरेपी को लेकर गलत धारणा है ज्यादा खतरनाक

bareilly@inext.co.in

BAREILLY (3 Feb): कैंसर का नाम ही इसकी भयावहता को बताने के लिए काफी है. कैंसर पीड़ित होने की जानकारी पर मरीज बीमारी से लड़ने की हिम्मत हार जाते हैं. हालांकि कुछ लोग इस बीमारी से लड़ते हैं और जीतते भी हैं और मुस्कुराते हुए फिर अपनी स्वस्थ जिंदगी गुजारते हैं, जैसे कभी कुछ हुआ ही न हो. कैंसर से लड़कर जीतने वाले ऐसे ही कुछ योद्धा बरेली मंडल में भी हैं, जो समय रहते इलाज कराने के बाद आज सामान्य जीवन जी रहे हैं और दूसरों को इस बीमारी से लड़ने के लिए अवेयर भी कर रहे हैं. ये कोई सेलिब्रिटी नहीं, बल्कि हमारे आसपास के ही आम लोग हैं. एसआरएमएस मेडिकल कॉलेज के कैंसर रोग एक्सपर्ट डॉ. पियूष कुमार अग्रवाल के अनुसार, कैंसर से डरने की नहीं, जागरूक होने की जरूरत है. समय पर जांच और इलाज से सही होना निश्चित है.

क्या और क्यों होता है कैंसर

कैंसर खुद मे कोई बीमारी नही बल्कि कोशिकाओं की अनियंत्रित वृद्धि है . जो शरीर के किसी भी अंग मे, कभी भी और किसी भी उम्र हो सकती है . यह वृद्धि एक अंग से होती हुई शरीर के दूसरे भाग को भी प्रभावित कर सकती है . शरीर का न भरने वाला घाव, किसी अंग विशेष मे लगातार दर्द, तेजी से बढ़ रही गांठ कैंसर की वजह हो सकती है . हां हर गांठ कैंसर नहीं होती . अस्वास्थ्यकर खानपान, जीवनशैली और प्रदूषण कैंसर के लिए जिम्मेदार होते हैं . इससे बचाव और जागरूकता कैंसर रोकने में कारगर है .

हफीज को हुआ था गले का कैंसर, अब पूरी तरह स्वस्थ

बरेली के मोहनपुर निवासी हफीज अहमद (65 वर्ष) को 2015 मे गले का कैंसर हुआ . कई जगह दिखाने के बाद हफीज अहमद निजी मेडिकल कॉलेज के आरआर कैंसर इंस्टीट्यूट पहुंचे . यहां डा .पियूष से मिले और इलाज आरंभ हुआ . करीब ढाई वर्ष इलाज के बाद हफीज अहमद पूरी तरह कैंसर मुक्त हुए . अब हफीज रिश्तेदारों और संबंधियों को कैंसर के प्रति जागरुक कर रहे हैं . वे सभी को कैंसर के लाइलाज न होने और समय पर उपचार से ठीक होने की बात कहते हैं .

रामवती ने लड़कर किया ब्रेस्ट कैंसर को पराजित

बरेली के इज्जतनगर स्थित रोड नंबर एक निवासी रामवती (60 वर्ष) के ब्रेस्ट में गांठ थी . धीरे धीरे इसमें दर्द होने लगा . इससे परेशान होकर उनके परिजन उन्हें लेकर 2014 में मेडिकल कालेज पहुंचे . जहां डा . अरविंद चौहान ने उनकी जांच की जिसमें ब्रेस्ट कैंसर की जानकारी मिली . करीब डेढ़ वर्ष इलाज के बाद रामवती को ब्रेस्ट कैंसर से निजात मिली . परिवार के साथ रामवती कैंसर के मरीजों को जागरूक करती हैं और स्वस्थ होने के लिए प्रेरित करती हैं .

कैंसर से डरें नहीं, बस जागरूक रहें

कैंसर लाइलाज नही, बस जागरूकता की कमी से लोगो को अपनी चपेट मे ले रहा है . शुरुआती चरणो मे पूरी तरह से इस भयानक बीमारी पर काबू करना संभव है . लेकिन इसकी जांच के लिए बायोप्सी कराने से डरना, रेडियोथेरेपी और कीमोथेरेपी को लेकर गलत धारणाओं से लोग इसके इलाज से बचते हैं . इस लापरवाही से यह बीमारी अंतिम चरण मे पहुंच कर लाइलाज हो जाती है . यदि समय से जांच और इलाज कराया जाए .

डॉ . पियूष कुमार अग्रवाल, डायरेक्टर, आरआर कैंसर इंस्टीट्यूट एंड रिसर्च सेंटर